महाभारत मे कर्ण: महा मानव की परिभाषा

प्रवीण पंकज

पूर्वी चंपारण

महर्षि वेद व्यास प्रणीत 'महाभारत' मे हम एक ऐसे विराट व्यक्तिव से परिचित होते हैं ,जिसने जगत में दानवीरता, कर्मनिष्ठता ,धर्मधीरता और सच्चरित्रता का ऐसा आदर्श उपस्थित किया, जिसने उसे द्वापर युग का दिव्यातिदिव्य महामानव बना दिया | महर्षि वेद व्यास ने लिखा है –

यदेतत सहजं वर्म कुंडले च तवानघ |

एतदुतकृत्य मे देहि यदि सत्यव्रतो भवान || १

अर्थात , हे अनघ ! यदि तुम सत्यव्रती हो, तो ये जो तुम्हारे शरीर के साथ उत्पन्न हुये कवच और कुंडल हैं , इन्हें काटकर मुझे दे दो |

ये याचना किसी साधारण भिक्षुक की नहीं , यह याचक स्वर्ग का सम्राट स्वयं इंद्र हैं और वह दाता कुंती का ज्येष्ठ पुत्र , सूर्य पुत्र पाडुनंदन महारथी कर्ण हैं , वही कर्ण जिसे जन्म के साथ जाने किस दुष्कृत्य की सजा स्वयं उनकी जननी ने दी | महर्षि वेद व्यास इस घटना का उल्लेख करते हुये लिखते हैं –

जात्मत्रांग च तं गर्भम धत्राया सम्मन्त्र्य भाविनी |

मंजूषायां समाधाय स्वसतीननन्या समन्तः||

मधच्छिष्टस्थितयां सा सुखायां रुदति स लाक्षन्यंग

शलक्ष्णयाँ सुपिधयाणांयामश्वनधाम वासृजत।।२

अर्थात, इस बालक के पैदा होते ही भामिनि कुन्ती ने धाय से सलाह लेकर एक पिटारी मंगवाई और उसमें सब ओर से सुन्दर बिछौने बिछा दिए।इसके बाद उस पिटारी में चारों ओर मोम चुपड़ दिया,जिससे उसके भीतर जल न प्रवेश कर सके।जब यह सब तरह से चिकनी और सुखद हो गई, तब उसके भीतर उस बालक को सुला दिया एवं रोते-रोते उस पिटारी को अश्व नदी में छोड़ दिया।

और यह पिटारी मिली चम्पा नगरी के प्रधान और हस्तिनापुर सम्राट धृतराष्ट्र के रथ चालक सुत वंशी अधिरथ और उनकी धर्मपत्नी राधा को,जो निःसन्तान थे।किन्तु प्रश्न यह उठता है कि ऐसी कौन-सी विवशता थी कि कुन्ती को अपने ही पुत्र को अश्व नदी में प्रवाहित करना पड़ा?कुन्ती की सेवा से प्रसन्न ऋषि दुर्वासा ने कुन्ती को एक मन्त्र दिया,जिससे वह किसी भी देवता को वशीभूत करके अपने आधीन कर सकती थी–

यं यं देवं त्वमेतेन मन्त्रेणावाहयिष्यसि।

तेन-तेन वशेभद्रे स्थात्यं ते भविष्यति।।३

अर्थात, भद्रे!तुम इस मंत्र के द्वारा जिस-जिस देवता का आह्वान करोगी,वह-वह तुम्हारे आधीन हो जाने के लिए बाध्य होगा।

कुमारी कुन्ती ने इसी मन्त्र की सत्यता की परीक्षा के लिए सूर्यदेव का आह्वान किया।ततपश्चात सूर्य प्रकट हुए और उन्होंने कुन्ती को एक कवच-कुण्डलधारी पुत्र दिया।कुन्ती अविवाहित थी,अतः समाज के लोक-लाज के कारण उन्हें शिशु को अश्व नदी में प्रवाहित करने के लिए विवश होना पड़ा।कालान्तर में अधिरथ के घर में पल रहा यह सूर्यपुत्र सुतपुत्र के नाम से जाना गया।किन्तु संकुचित सामाजिक-विभाजन कर्ण को आधारहीन लगता था।कर्ण पुरुषार्थी थे। जब आचार्य द्रोण ने उन्हें निम्न जाति,सुतजन्मा जानकर शिष्यत्व देने से इनकार कर दिया,तब कर्ण ने स्वाध्याय करके धनुर्विद्या सीखी और न केवल सीखी,अपितु राजकुमारों की प्रतियोगिता-स्थल पर द्रोण-शिष्य क्षत्रिय अर्जुन,पाण्डुपुत्र अर्जुन,हस्तीनापुर के राजकुमार अर्जुन को भरी सभा में युद्ध के लिए ललकार दिया और कुलीन-वर्ग के समक्ष जब कर्ण से उनकी जाति पूछी गई,तब उन्होंने धनुष और बाण को ही अपनी जाति बता दी।जब सूतपुत्र होने के कारण उन्हें राजकुमार अर्जुन से लड़ने की आज्ञा न दी गई, तो दुर्योधन और शकुनि के कुचाल ने उनके जीवन की दिशा क्षण भर में ही बदल दी।हस्तिनापुर की भरी सभा के बीच ही जब दुर्योधन ने कहा-

न हि ते पाण्डवाः सर्वे कलमरहन्ति षोडशीम।

अन्ये वा पुरुषव्याघ्र राजानो अभ्युदितोदिता।।४

अर्थात, पुरुषसिंह! वे समस्त पाण्डव अथवा अन्य श्रेष्ठतम नरेश तुम्हारी सोलहवीं कला के बराबर भी नहीं हो सकते।यही नहीं दुर्योधन ने अपने सिर का मुकुट कर्ण के मस्तक पर रखा और उनको अंग प्रदेश का राजा नियुक्त कर दिया।यहीं वह घटना है, जिसने कर्ण को अधर्म के धर्म-पालन के लिए विवश किया और कर्ण न चाहते हुए भी दुर्योधन की मित्रता के ऋण से दबकर दुर्योधन के साथ अधर्म की राह पर चल पड़े।

कर्ण का सम्पूर्ण जीवन बेहद ही उतार-चढ़ाव से भरा रहा।एक ओर जहां द्रोणाचार्य ने उन्हें शिष्य स्वीकार करने से इनकार किया,वही गुरू परशुराम ने उनको मिथ्या-वचन के कारण घोरतम श्राप देकर मानो उनके प्राण ही ले लिए।।महर्षि वेदव्यास की महाभारत से यह स्पष्त हो जाता है कि दुर्योधन द्वारा अंगराज बनाए जाने के पश्चात कर्ण का प्रत्येक श्वास दुर्योधन का ऋणी था।चाहे कर्ण पर ब्राह्मण के गौ-वध का दोष लगाया गया हो,अथवा गुरु परशुराम से छल का।महर्षि वेदव्यास ने महाभारत में स्पष्ट लिखा है–

पिता गुरुर्न संदेहो वेद-विद्याप्रदः प्रभुः।

अतो भार्गव इत्युक्तन मया गोत्रं तवांतिके।।५

इसप्रकार वेदव्यास जी ने कर्ण को गुरु से छल करने का पापी नहीं माना है।किन्तु वे पुनः लिखते हैं-

यस्यांमिथयोपचरितो ह्यास्त्रलोभादिह त्वया।

तस्मादेतद्वि ते मूढ ब्रह्मास्त्रम प्रतिभाष्यति।।

अन्यत्र वधकालात ते सदृश्येन समीयुषः।

अब्राह्मणे न हि ब्रह्मा ध्रुव तिष्ठेत कदाचन।।६

अर्थात, परशुराम क्रोध के वशीभूत कर्ण से कहते हैं–

मूढ! तूने ब्रह्मास्त्र के लोभ से झूठ बोलकर यहां मेरे साथ मिथ्याचार किया है।इसलिए जबतक तू संग्राम में समान योद्धा के साथ नहीं भिड़ेगा और तेरी मृत्यु निकट नहीं आ जाएगी,तभी तक तुझे इस ब्रह्मास्त्र का स्मरण बना रहेगा।जो ब्राह्मण नहीं है, उसके हृदय में ब्रह्मास्त्र कभी स्थिर नहीं रह सकता।

ध्यातव्य है कि महर्षि वेदव्यास यदि गुरु को पिता तुल्य सिद्ध कर देते हैं,तब ऐसी स्थिति में महापराक्रमी परशुराम के लिए क्या कर्ण को ऐसा श्राप देना उचित था? कदापि नहीं! यदि गुरु पिता समान है,तब तो शिष्य की जाति और गोत्र दोनों ही गुरु की जाति और गोत्र हो जाता है।और यदि यह तर्क सत्य है, तो भार्गव गोत्रधारी ब्राह्मण परशुराम के शिष्य कर्ण की जाति भी स्वतः ही ब्राह्मण और गोत्र भार्गव सिद्ध हो जाता है।इसलिए परशुराम द्वारा कर्ण को श्राप देना किस दृष्टि से उचित था,समझ से परे है।सम्भवतः यह कर्ण के जीवन की विडम्बना थी कि उन्हें हर तरफ से केवल और केवल दुःख ही मिला,चाहे माता द्वारा जन्मते ही नदी में बहा देना हो,दुर्योधन का लोभभरा मैत्री-प्रेम हो,धनुर्ज्ञानी होते हुए भी प्रतियोगिता-स्थल पर हस्तिनापुर के समक्ष निम्नजाति के कारण उपेक्षित होना हो,परशुराम द्वारा श्राप दिया जाना या शब्दवेधी बाण का अभ्यास करते समय अनजाने में ब्राह्मण के गौ के वध कारण मिला श्राप-

येन विस्पर्धसे नित्यं तदर्थं घटसे$निषम।

युध्यत स्तेन ते पाप भूमिशचक्रंग्रषिष्यति।।७

तात्पर्य यह कि हे कर्ण!जब एक महत्वपूर्ण युद्ध में तुम्हारे रथ का पहिया भूमि में धंस जाएगा,तब तेरी पराजय हो जाएगी।

महर्षि की महाभारत पढ़ते हुए इस लगता है जैसे कर्ण के हिस्से केवल और केवल श्राप या छल ही आया।महाभारत में कितने ही ऐसे प्रसंग आते हैं, जिनमें नियति कर्ण को छलती है।इंद्र ने जन्मजात कवच-कुण्डल पहने कर्ण के साथ जो किया,वह देव-समाज पर एक अमित दाग है।महाभारत के अनुशीलन के क्रम में हम सहज ही समझ जाते हैं कि अर्जुन एक ओर तो भाग्य के बली थे ही,दूसरी ओर पिता इंद्र की कृपा-कवच से मण्डित भी थे।अपने पुत्र अर्जुन की प्राण-रक्षा के लिए स्वयं इंद्र को भिक्षुक बनकर कर्ण के पास उनका कवच-कुण्डल मांगने आना पड़ा।महाभारत के अनुसार कर्ण के पिता सूर्य ने स्वप्न में आकर कर्ण को बताया था-

यस्त्वं प्राणविरोधेन कीर्तिमिच्छसि शाश्वतीम।

सा ते प्राणान् समादाय गमिष्यति न संशयः।।८

हे कर्ण! यदि तुम प्राणों का विरोध करके सनातन कीर्ति प्राप्त करना चाहते हो,तो इसमें संदेह नहीं कि वह कीर्ति तुम्हारे प्राणों को लेकर ही जाएगी।

इतना ही नहीं सूर्य ने स्पष्ट शब्दों में कर्ण को स्वप्न में यह भी बता दिया था कि–

त्व हि नित्यं नरव्याघ्र स्पर्द्धसे सत्यसाचिन।

सत्यसाची त्वयाचेह युधि शूरःसमेसष्यति।।

न तू त्वमर्जन: शक्त:कुण्डलभ्याम समन्वितम।

विजेतु युधि यधस्य स्वीमिंद्र सखा भवेत।।९

हे कर्ण!यदि तुम अर्जुन को जीतना चाहते हो, तो कदापि ये शुभ कवच और कुण्डल इंद्र को मत देना क्योंकि–

यदि दास्यसि कर्ण त्वयम सहजे कुण्डले शुभे।

आयुष: प्रक्षयं गत्वा मृत्योर्वशमुपैष्यसि।।१०

यदि तुम अपने जन्म के साथ उत्पन्न ये सुन्दर कवच-कुण्डल इन्द्र को दे दोगे, तो तुम्हारी आयु क्षीण हो जाएगी और तुम मृत्यु के आधीन हो जाओगे।

किन्तु यह सुनकर भी कर्ण ने पिता सूर्य से कहा-

सो$मिन्द्राय दास्यामि कुण्डले सह वर्मणा।

यदि मां बलवृत्रघ्नो भिक्षार्थ मुपयास्यति।।११

अर्थात, कर्ण कहते हैं कि– मेरे जैसे शुर वीर के लिए यही उचित है कि प्राण देकर भी वचन-पालन और यश को बना रखूं।ऐसे यश की प्राप्ति यदि मृत्यु की कीमत चुका के भी मिल जाए,तो मृत्यु का आलिंगन करना ही श्रेयस्कर है।

इतना ही नहीं,जिस माता ने उन्हें जन्म के साथ ही अश्व नदी में बहा दिया, उस माता को भी वे खाली हाथ लौटने नहीं देते।उन्होंने कुन्ती को वचन दिया कि कुरूक्षेत्र की लड़ाई का परिणाम चाहे जो हो,किन्तु वे अर्जुन के अतिरिक्त शेष चार कुन्ती-पुत्रों अर्थात अपने चार अनुजों का वध नहीं करेंगे।महाभारत के अनुशीलन से यह भी ज्ञात होता है कि कुरुक्षेत्र में कौरव-पक्ष का सेनापतित्व करते हुए जब कर्ण का युद्ध अपने ही अनुज अर्जुन से होने लगा, तभी गौ-पालक ब्राह्मण के श्राप के कारण कर्ण के रथ का पहिया कीचड़ में धंस गया।कर्ण ने अर्जुन को तनिक देर रुकने के लिए कहा और रथ से उतरकर उसके पहिये को कीचड़ से बाहर निकालने का प्रयत्न करने लगे।इसी समय स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा–

कि छीन्धस्य मूर्द्धा न मरस शरेण

न यावदारोहति वैरथंग वृष:।।१२

और तब विष्णु अवतार,गीतोपदेशक भगवान श्रीकृष्ण का आदेश पाकर अर्जुन ने रथ का पहिया निकाल रहे निहत्थे कर्ण पर 'आंजलिक 'बाण चलाया–

ततः किरीतिप्रतिलभ्य संज्ञान

जग्राह बाणं यमदण्ड कल्पम।

ततोअर्जुन:प्रांजलिकं महात्मा।।१३

और इसप्रकार द्वापर का यह दिनकर कर्ण अर्जुन और स्वयं भगवान श्रीकृष्ण के छल के कारण कुरूक्षेत्र में दुर्योधन की मित्रता का ऋण चुकाकर वीरगति को प्राप्त हुए।इसप्रकार धीरता,दानवीरता, भ्रातृ-प्रेम, गुरु-भक्ति, मित्रता का आदर्श स्थापित करनेवाले महामानव कर्ण अपने दैवीय गुणों के प्रकाश से जगत को आज भी प्रकाशित कर रहे हैं और जबतक यह सृष्टि रहेगी,वे अपने महमानवीय गुणों से संसार को मानवता का संदेश देते रहेंगे।

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची

१. महाभारत भाग -2 : श्री मन्महर्षि वेदव्यास (अनुवाद – साहित्यचार्य पंडित राम नारायण दत्त शास्त्री 'राम') पृष्ठ संख्या – 973 प्रकाशक – गीता प्रेस , गोरखपुर , संवत्- 2069

२. महाभारत भाग -2 : श्री मन्महर्षि वेदव्यास (अनुवाद – साहित्यचार्य पंडित राम नारायण दत्त शास्त्री 'राम') पृष्ठ संख्या – 969 प्रकाशक – गीता प्रेस , गोरखपुर , संवत्- 2069

३. महाभारत भाग -2 : श्री मन्महर्षि वेदव्यास (अनुवाद – साहित्यचार्य पंडित राम नारायण दत्त शास्त्री 'राम') पृष्ठ संख्या – 964 प्रकाशक – गीता प्रेस , गोरखपुर , संवत्- 2069

४. महाभारत भाग -2 : श्री मन्महर्षि वेदव्यास (अनुवाद – साहित्यचार्य पंडित राम नारायण दत्त शास्त्री 'राम') पृष्ठ संख्या –811प्रकाशक – गीता प्रेस , गोरखपुर , संवत्- 2069

५. महाभारत भाग -5 : श्री मन्महर्षि वेदव्यास (अनुवाद – साहित्यचार्य पंडित राम नारायण दत्त शास्त्री 'राम') पृष्ठ संख्या – 24 प्रकाशक – गीता प्रेस , गोरखपुर , संवत्- 2069

६. महाभारत भाग -5 : श्री मन्महर्षि वेदव्यास (अनुवाद – साहित्यचार्य पंडित राम नारायण दत्त शास्त्री 'राम') पृष्ठ संख्या – 24 प्रकाशक – गीता प्रेस , गोरखपुर , संवत्- 2069

७. महाभारत भाग -5 : श्री मन्महर्षि वेदव्यास (अनुवाद – साहित्यचार्य पंडित राम नारायण दत्त शास्त्री 'राम') पृष्ठ संख्या – 22 प्रकाशक – गीता प्रेस , गोरखपुर , संवत्- 2069

८. महाभारत भाग -2 : श्री मन्महर्षि वेदव्यास (अनुवाद – साहित्यचार्य पंडित राम नारायण दत्त शास्त्री 'राम') पृष्ठ संख्या – 955 प्रकाशक – गीता प्रेस , गोरखपुर , संवत्- 2069

९. महाभारत भाग -2 : श्री मन्महर्षि वेदव्यास (अनुवाद – साहित्यचार्य पंडित राम नारायण दत्त शास्त्री 'राम') पृष्ठ संख्या – 956 प्रकाशक – गीता प्रेस , गोरखपुर , संवत्- 2069

१०. महाभारत भाग -2 : श्री मन्महर्षि वेदव्यास (अनुवाद – साहित्यचार्य पंडित राम नारायण दत्त शास्त्री 'राम') पृष्ठ संख्या – 953 प्रकाशक – गीता प्रेस , गोरखपुर , संवत्- 2069

११. महाभारत भाग -2 : श्री मन्महर्षि वेदव्यास (अनुवाद – साहित्यचार्य पंडित राम नारायण दत्त शास्त्री 'राम') पृष्ठ संख्या – 954-955 प्रकाशक – गीता प्रेस , गोरखपुर , संवत्- 2069

१२. महाभारत भाग -4 : श्री मन्महर्षि वेदव्यास (अनुवाद – साहित्यचार्य पंडित राम नारायण दत्त शास्त्री 'राम') पृष्ठ संख्या – 1112 प्रकाशक – गीता प्रेस , गोरखपुर , संवत्- 2069

१३. महाभारत भाग -4 : श्री मन्महर्षि वेदव्यास (अनुवाद – साहित्यचार्य पंडित राम नारायण दत्त शास्त्री 'राम') पृष्ठ संख्या – 1112 प्रकाशक – गीता प्रेस , गोरखपुर , संवत्- 2069